चौसठ थंभ चौक खिलवत का बेवरा

इन बिध साथजी जागिए, बताए देऊं रे जीवन।
स्याम स्यामा जी साथ जी, जित बैठे चौक वतन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे साथजी! श्री राजश्यामाजी के स्वरूप सिनगार को हृदय में लेकर जागिए। यही हमारा जीवन है (हमारी जिन्दगी है)। श्री राजजी, श्यामाजी और सब सुन्दरसाथजी अपने मूल वतन परमधाम के प्रथम भोम (मूल-मिलावा) में बैठे हैं।

याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि।। २ ।।

हे साथजी! उस घड़ी को याद करो जब हमने श्री राजजी महाराज से हंसी के खेल की मांग की थी। अब खेल की खुशियों को दिल में लेकर परमधाम में जागो और अपने धनी का सुख लो।

सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहें।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जाहें।। ३ ।।

अपनी सुरता को सदा मूल-मिलावा में विराजमान श्री श्याम श्यामाजी के चरणों में रखो जहां प्रथम भोम में श्री राजजी, श्री श्यामाजी और हम सब सखियां बैठी हैं।

चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत।। ४ ।।

उस गोल हवेली के चबूतरे को घेरकर चौसठ थंभ आए हैं, जिसमें कठेड़ा लगा है। नीचे गिलम बिछी है और ऊपर चौसठ थंभों को लगता चन्द्रवा लगा है।

कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गिरदवाए।
सोले थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए।। ५ ।।

चबूतरे के किनारे पर घेरकर सोलह थंभों को लगता चार भागों में कठेड़ा है, जिसकी बहुत सुन्दर शोभा है।

चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर।। ६ ।।

चारों तरफ के चार दरवाजे छोड़कर बाकी सब थंभों में कठेड़ा लगा है। चौसठ थंभों के बीच चबूतरा भरकर पश्म की गिलम (गलीचा) बिछी है।

कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग।। ७ ।।

चौसठ थंभों का बेवरा इस प्रकार है चार खांचों में सोलह-सोलह थंभ आए हैं, जिनमें चार-चार धातुओं के और बारह-बारह थंभ नगों के चारों तरफ आए हैं। इस प्रकार सोलह तरह के रंग आए हैं।

चारों तरफ एक एक रंग के, तैसी तरफों चार।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार।। ८ ।।

चारों तरफ एक-एक खांचे में एक-एक रंग के थंभ शोभा देते हैं, जिनके रंग एक-दूसरे के साथ मिलकर चारों तरफ से चौसठ थंभों की शोभा को बढ़ा देते हैं।

Nijanand App

ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर।। ९ ।।

चार धातुओं के जो थंभ कहे हैं उनमें हेम, कंचन, चांदी तथा नूर के थंभ हैं। यह अन्दर चार रंग की शोभा देते हैं।

और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पांने हीरे पुखराज।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज।। १० ।।

बारह थंभ जवेरों के हैं, उनमें पाच, पन्ना, हीरा, पुखराज, माणिक, मोती, गोमादिक और पिरोजा के हैं तथा

नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल।
और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल।। ११ ।।

नीलवी, लसनियां, परवाल और कपूरिया रंग के हैं। चार द्वारों में चार रंग हैं और इस तरह से यह बारह रंग आए हैं।

चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन।
पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन।। १२ ।।

चार रंग के चार दरवाजे हैं। इनके आठ थंभ हुए। इनमें पूरब की दिशा में पाच का, दक्षिण में माणिक का, पच्छिम में नीलवी (नीलम) का और उत्तर में पुखराज का रंग शोभा देता है।

और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग।
द्वार नीलवी संग दोए पाच के, करें साम सामी जंग।। १३ ।।

नीलवी के दो थंभ पूरब के दरवाजे में पाच के थंभों के दाएं-बाएं आए हैं। इसी तरह पच्छिम के दरवाजे में नीलवी के थंभों के दाएं-बाएं पाच के दो थंभ आए हैं, जिनके रंग आमने-सामने टकराते हैं।

दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास।
दोए थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास।। १४ ।।

दक्षिण के द्वार के माणिक के थंभों के दाएं-बाएं दो थंभ पुखराज के आए हैं। उत्तर के द्वार में दो थंभ जो पुखराज के हैं, उनके दाएं-बाएं दो थंभ माणिक के आए हैं।

थंभ बारे भए इन बिध, साम सामी एक एक।
यों बारे बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक।। १५ ।।

बाकी चारों खांचों में एक-एक में बारह-बारह थंभ सबमें आए हैं। इस तरह से यह बारह रंग के बारह थंभ चारों तरफ एक दूसरे के सामने आए हैं।

हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल।। १६ ।।

पूरब की तरफ से और पच्छिम की तरफ गिनना शुरू करें तो थंभों के रंग में पहले हीरा, लसनियां, गोमादिक, मोती, पन्ना, परवाल, हेम, चांदी, नूर और कंचन के शोभा देते हैं।

Nijanand App

पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए।
गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए।। १७ ।।

इनके आगे पिरोजा और कपूरिया के थंभ शोभा देते हैं। इस तरह से पिरोजा और कपूरिया के दो रंगों के आठ थंभ चारों खांचों में शोभा देते हैं। अब इनको पूरब और पच्छिम के दरवाजे से शुरू करके उत्तर और दक्षिण के दरवाजों की तरफ गिनना है तो हर एक रंग के चार-चार थंभ उसी क्रम में दिखाई देंगे।

ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के।
सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए।। १८ ।।

यह सोलह थंभों की हकीकत बताई है। एक-एक रंग के चार-चार थंभे हैं, जो आमने-सामने शोभा देते हैं और इस तरह से चौसठ थंभों की शोभा है।

चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच।
जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच।। १९ ।।

चौसठ थंभों के बीच में चारों तरफ भरकर चन्द्रवा लगा है और उसी तरीके से चबूतरे पर भरकर गलीचा बिछा है। यहां पर हर थंभों की किरणें टकराती हैं।

माहें बिरिख बेली कई कटाव, कई फूल पात नकस।
देख जवेर जुगत कई चंद्रवा, जानों के अति सरस।। २० ।।

चन्द्रवा में कई तरह के वृक्ष, बेलियां, कटाव, फूल, पत्ते, नक्शकारी जवेरों से बनी हैं, जो बहुत ही अच्छी लगती हैं।

इन चौक बिछाई गिलम, ता पर सिंघासन।
चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन।। २१ ।।

इस चबूतरे के ऊपर गिलम (गलीचा) बिछी है जिसके ऊपर सिंहासन रखा है। सिंहासन की जोत चारों तरफ झलकती है। रंगों की किरणें उठती हैं।

झलकत सुन्दर गिलम, अति सोभित सिंघासन।
यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन।। २२ ।।

सुन्दर गिलम के ऊपर सुन्दर सिंहासन शोभा देता है, जिसमें श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। वहां की जमीन और जवेरों का तेज बेशुमार है।

लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर।। २३ ।।

थंभों से लगते घेरकर एक सीध में लाल तकिए रखे हैं जो पश्म से भरे बेहद नरम हैं।

जेता एक कठेड़ा, सब में सुन्दर तकिए।
तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले।। २४ ।।

जितना कठेड़ा आया है उतने सबमें तकिए शोभा ले रहे हैं। उन तकियों के साथ सखियां एकदिली से भरके बैठी हैं।

Nijanand App

जिन बिध बैठियां बीच में, याही बिध गिरदवाए।
तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैठा साथ भराए।। २५ ।।

सखियां जैसे बीच में बैठी हैं वैसे ही घेरकर आई हैं। चारों तरफ कठेड़ा तक भरकर बैठी हैं।

किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत।
कई तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत।। २६ ।।

सिंहासन के नए-नए रंगों की कई तरह की तरंगें उठती हैं जो सिंहासन में जड़े हुए नूर के नगों की तरंगें हैं।

पाइए इन तखत के, उत्तम रंग कंचन।
छे डांडे छे पाइयों पर, अति सुन्दर सिंघासन।। २७ ।।

इस तख्त के पाए सुन्दर सोने के हैं। छः पायों पर छः डंडे आए हैं, जिनसे सिंहासन सजा है।

दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसो दिस देखत ए।। २८ ।।

सिंहासन के डंडों में दस पहलों में दस रंगों की शोभा है और हर तरफ दसों दिशाओं में अलग-अलग रंग दिखाई देते हैं।

एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग।
यों दसो दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कई तरंग।। २९ ।।

एक तरफ एक रंग है, दूसरी तरफ दूसरा रंग है। इसी तरह से दसों दिशाओं में दस रंग हैं। जिन रंगों की कई तरंगें उठती हैं।

तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन।
कई रंग बिरिख बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन।। ३० ।।

पीछे के जो तीन डंडे हैं, उनके बीच दो तकिए रखे हैं, जिनमें कई रंगों के वृक्ष, बेलें और बूटियां बनी हैं इनका वर्णन कैसे करूं?

चारों किनारे चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार।
चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार।। ३१ ।।

चारों तरफ बेलों की चार पंक्तियां आई हैं, जिनमें ऊपर चढ़ते हुए सुन्दर फूल बने हैं, जो जगमगा रहे हैं।

तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए।
माहें कई दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए।। ३२ ।।

छः डंडों पर सुन्दर दो छतरियां हैं, जिनमें कई तरह की डोरी, बेली, कांगरी की शोभा है। इनका वर्णन कैसे करूं?

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन।। ३३ ।।

दो छतरियों के ऊपर दो कलश शोभा दे रहे हैं और छः कलश छः डंडों पर हैं। इन आठों कलशों की रोशनी आकाश में आपस में टकराती है।

Nijanand App

नकस फूल कटाव कई, कई तेज जोत जुगत।
देख देख के देखिए, नैनां क्योंए न होए तृपित।। ३४ ।।

नक्शकारी, फूल और कटाव में कई तरह की तेज और जोत की जुगत कलशों में दिखाई देती है। जिसे बार-बार देखने पर भी नयन तृप्त नहीं होते हैं।

चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार।
बैठे सुन्दर सरूप दोऊ, देख देख जाऊं बलिहार।। ३५ ।।

सिंहासन के ऊपर दो चाकले पश्म के बिछे हैं, जिनकी किरणों का तेज अति नर्म है। उन चाकलों पर युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजी को देखकर बलि-बलि जाती हूं।

जरे जिमी की रोसनीं, भराए रही आसमान।
क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान।। ३६ ।।

यहां की जमीन के कण की रोशनी आकाश में नहीं समाती। फिर जिस तख्त पर श्री राजजी महाराज बैठे हैं, उसकी जोत का वर्णन कैसे करूं?

बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम।
ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना भाजे न हाम।। ३७ ।।

मैं यहां की जबान से मूल-मिलावा के रंगों का, नगों का वर्णन करती हूं, परन्तु यहां के शब्द वहां तक पहुंचते ही नहीं। बिना कहे चाहना भी पूरी नहीं होती।

ए जवेर कई भांत के, सोभित भांत रूप कई।
सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मई।। ३८ ।।

यह जवेर कई तरह के हैं। कई तरह की बनावट में शोभा देते हैं। इनसे प्रतिक्षण कई तरह के रूप दिखाई देते हैं। इस तरह से यह सारा एक ही नूर का स्वरूप है।

गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर।
जोतें जोत सब मिल रहीं, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर।। ३९ ।।

गिलम के ऊपर बने फूल और बेलों का तेज और ऊपर के चन्द्रवा और थंभों का तेज एक-दूसरे से मिल जाता है, इसलिए अलग-अलग रंगों के नगों का कैसे बयान करूं?

ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत।
पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत।। ४० ।।

यह मूल-मिलावा अपना है। यहीं पर अपनी नजर रखो। पीछे जरा भी मत हटाओ। इससे अपने तन में इश्क पैदा हो जाएगा।

जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए परआतम।
सो परआतम लेय के, विलसिए संग खसम।। ४१ ।।

अपने मूल स्वरूप जिनको अपनी परआतम कहते हैं, उनमें सावचेत होकर श्री राजजी महाराज के साथ आनन्द करो।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन।। ४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैं श्री राजजी महाराज के मूल स्वरूप का वर्णन करती हूं। वर्णन करने की मेहर माशूक श्री राजजी महाराज ने मुझे दी है, जिससे मैं वर्णन करती हूं। तुम अन्तःकरण में धारण करना।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ५३२ ।।

श्री राजजी को सिनगार दूसरो

मंगला चरण

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रुच रुच के, एही तुमारा विश्राम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी श्री राजजी महाराज! आपका अर्श मेरा दिल है। आप आकर अपने अर्श में आराम करें। मैंने हृदय में बड़ी चाहनाओं के साथ आपके लिए सुन्दर सेज बिछाई है। इसमें आकर आप विश्राम करें।

अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात।
निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात।। २ ।।

मोमिनों का दिल ही आपका अर्श है। जहां सब सुख सुविधाएं हैं। यह मोमिन आपकी ही अंगना हैं, इसलिए एक क्षण के लिए आपसे अलग नहीं हो सकतीं।

इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम।
अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम।। ३ ।।

अपने इश्क से लबरेज (लबालब भरी) दिल की सुराही को हाथ में लेकर रात-दिन अपने मोमिनों को इश्क की शराब पिलाइए और इन्हें अपने इश्क की पूरी खुराक दीजिए।

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम।
रूहें त्रिखावंती हक की, सो चाहें धनी प्रेम काम।। ४ ।।

आपने स्वयं आकर अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी और रसूल साहब के द्वारा अपने आने की गवाही दिलाई। रूहें आपके प्रेम की प्यासी थीं और आपके प्रेम को ही चाह रही थीं।

फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम।
दई तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अव्वल से धाम।। ५ ।।

दूसरी गवाही शुकदेवजी भागवत के द्वारा लाए, जिसमें लिखा है कि श्री अक्षरातीत पारब्रह्म अपने परमधाम से अपनी आत्माओं के साथ कलियुग में आएंगे और अपने तारतम ज्ञान से सबको पहचान कराएंगे।

खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम।। ६ ।।

परमधाम के खिलवतखाना (मूल-मिलावा) में तख्त पर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। हे श्री राजजी महाराज! आप अपने इश्क की ऐसी मस्ती दे दो जिससे मैं श्री राजजी श्री श्यामाजी के ही चरण कमलों में गर्क हो जाऊं।

Nijanand App